फैसला दरबार का | By Mukesh Bagda

मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

फैसला दरबार का सांवले सरकार का
मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

हमने देखी तेरी अदालत
चलती नहीं किसी की वकालत
ये है दर इन्साफ का सांवले सरकार का
मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

जबसे हमने तुमको माना
तेरी शक्ति को पहचाना
तू है मसीहा आज का सांवले सरकार का
मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

तेरी मर्ज़ी मेरी मर्ज़ी
हमको परवाह नहीं किसी की
ये है रिश्ता प्यार का सांवले सरकार का
मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

हमको तेरी शरण रहना है
बनवारी फिर क्या डरना है
मैं हूँ सेवक आपका सांवले सरकार का
मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है मंज़ूर है

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ab%e0%a5%88%e0%a4%b8%e0%a4%b2%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a4%b0%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a4%be-by-mukesh-bagda/